आर0के0कुँवर

उत्तराखण्ड शासन

निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा
उत्तराखण्ड देहरादून।
संख्या/1346 दिनांक 10/08 / 2018

स्वतंत्रता दिवस संदेश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि आज हम बड़े उत्साह के साथ स्वतंत्रता दिवस मना रहे हैं।

72वें स्वतंत्रता दिवस के पावन अवसर पर समस्त छात्र–छात्राओं, विद्वान शिक्षक/शिक्षिकाओं, शिक्षणेत्तर कर्मियों, अभिभावकों एवं सम्मानित नागरिकों को हार्दिक शुभकामनायें।

आज के दिन 15 अगस्त 1947 को हमारा देश सदियों की परतन्त्रता के उपरान्त स्वाधीन हुआ। स्वतंत्रता से पूर्व हमारा देश न केवल राजनैतिक अपितु आर्थिक स्तर पर भी विदेशी सत्ता के द्वारा शासित होता था। हम आभारी हैं अपने उन वीर सैनानियों एवं स्वतंत्रता के लिये आन्दोलन करने वाले साहसी नायकों का जिनके प्रयासों से देश लम्बे संघर्ष के उपरान्त स्वतंत्र हुआ। आजादी के 71 वर्ष पूर्व परतन्त्रता का दंश झेलने के साक्षी अधिकांश वयस्क नागरिक आज हमारे बीच नहीं हैं परन्तु उनके द्वारा समय–समय पर स्वतंत्रता पूर्व की घटनाओं का जिक किया जाता था। जिससे हमारे मन में देश के लिये कर गुजरने की उत्कंठा उत्पन्न होती थी।

आज हमें नवयुवकों एवं छात्र–छात्राओं को स्वाधीनता से जुड़ी घटनाओं से परिचित कराने की आवश्यकता है। यद्यपि हमारी पाठ्य–पुस्तकों में स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े पाठों को समाविष्ट किया गया है। परन्तु शिक्षकों से अपेक्षा है कि विद्यालय के इतिहास, नागरिक शास्त्र एवं सामाजिक विज्ञान के सन्दर्भों को प्रार्थना सभा में सप्ताह में एक बार आजादी से जुड़े देशभक्तों एवं घटनाओं के दृष्टान्त बच्चों से अवश्य साझा किये जायें। इससे बच्चों में देश के प्रति प्रेम के साथ–साथ एकता एवं अखण्डता की भावना अवश्य बलवती होगी।

विद्यालयी शिक्षा से जुड़े अभिकर्मियों का यह प्रबल दायित्व हो जाता है कि हम बच्चों में आरम्भ से ही कर्तव्यपरायणता की भावना विकसित करें, और यह तभी सम्भव है, जब हम अपने कार्य के प्रति पूर्ण निष्ठा से समर्पित हों। कोई भी कार्य छोटा या बड़ा नहीं होता है। मात्र सोच बदलने की आवश्यकता है कि मैं अपने कार्य के प्रति कितना ईमानदार हूँ। इन बातों को हमारे छात्र–छात्रायें अपने जीवन में अंगीकार करने का प्रयास करेंगे।

हम अक्सर अपने छात्र जीवन की याद करते हुये आपस में बातचीत करते हैं कि कौन–कौन से अध्यापक कितनी तन्मयता एवं परिश्रम से हमें पढ़ाते थे तथा उनकी पढ़ायी गई कौन–कौन सी बातें हमें आज भी याद हैं तथा उनकी किन किन बातों का प्रभाव हमारे जीवन पर पड़ा है। मैं अपेक्षा करता हूँ कि भविष्य में जब ये नौनिहाल अपने बचपन के दिनों की याद करें तो आपको एक परिश्रमी एवं कर्त्तव्यपरायण शिक्षक के रुप में याद करते हुये आपके बताये हुये रास्ते पर चलने का प्रयास करें। बच्चों में शिक्षा के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करना शिक्षण का महत्वपूर्ण आयाम है और यह तभी सम्भव है जब हम मन से अमुक पाठ की पृष्ठभूमि में प्रवेश कर अध्यापन करें।

Scanned by CamScanner

शिक्षणेत्तर अभिकर्मियों से भी मेरा अनुरोध है कि शिक्षकों की सेवा सम्बन्धी समस्याओं का त्वरित एवं ईमानदारी से निस्तारण करें। यदि किसी प्रकरण पर कोई आपत्ति हो तो उसका समय से निराकरण करने हेतु सम्बन्धित को दिशानिर्देश प्रदान करें। इससे शिक्षक पूर्ण मनोयोग से शिक्षण में अपना समय दे सकेंगे।

शिक्षक साथी बच्चों में अच्छी आदतों का विकास कर उन्हें आत्मनिर्भर बनने के तरीके भी सिखायें। समय–समय पर बच्चों को समूह में जिम्मेदारियां दी जांय। परन्तु उनका अनुश्रवण भी करते रहें। समुदाय को यह विश्वास दिलायें कि उनके बच्चों का भविष्य सुरक्षित हाथों में है। इससे समुदाय भी बढ़चढ़ कर संस्था के विकास हेतु आगे आयेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

अन्त में विद्यालयी शिक्षा परिवार के समस्त शैक्षिक अभिकर्मियों को एक बार पुनः स्वंतत्रता दिवस की शुभकामनाओं सहित।

देहरादून
दिनांक 10.8.18

(आर0के0कुँवर)

Scanned by CamScanner